भारत की आदिवासी लोककथाओं में स्त्रीविमर्श

डॉ. सुश्री शरद सिंह

मानवीय जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखने वाले गुणों को मानव मूल्य कहा जाता है। आज मूल्य अर्थात् 'वेल्यू' शब्द का प्रयोग सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों में समान रूप से व्यवहार के लिए होने लगा है। मूल्य शाश्वत है। इनका निर्माण मानव के साथ-साथ हुआ है। यदि इसका अंत होगा तो फिर सभ्यता के साथ मानवता भी समाप्त हो जायेगी। 'मूल्य' उन्हीं व्यवहारों को कहा जाता है जिनमें मानव जीवन का हित समाविष्ट हो, जिनकी रक्षा करना समाज अपना सर्वोच्च कर्त्तव्य मानता है। मूल्य परम्परा का प्राण तत्व है ये जीवन के आदर्श एवं सर्वसम्मत सिद्धान्त होते हैं। मूल्यों को अपनाकर जाति ,धर्म और समाज को, मानव जीवन को सुन्दर बनाने का प्रयास किया जाता है।

मूल्य सामाजिक मान्यताओं के साथ बदलते रहते हैं,किन्तु उनमें अन्तर्निहित मंगल कामना और सार्वजनिक हित की भावना कभी तिरोहित नहीं होती। नये परिवेश में जब पुरानी मान्यताएं कालातीत हो जाती हैं तो समाज नयी मान्यताओं को स्वीकार कर लेता है और वे ही मान्यताएं 'मूल्य' बन जाती हैं। पुरातन काल में जीवन मूल्यों के रूप में श्रद्धा आस्था ,धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को स्वीकार किया जाता है। वहीं नवीन मूल्यों में सत्य, अहिंसा, सहअस्तित्व, सहानुभूति, करूणा, दया आदि आते हैं।

जहां तक स्त्री विमर्श का प्रश्न है तो स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवादी आंदोलन आदि- इन सभी के मूल में एक ही चिन्तन दृष्टिगत होता है, स्त्री के अस्तित्व को उसके मौलिक रूप में स्थापित करना । स्त्री विमर्श को ले कर कभी-कभी यह भ्रम उत्पन्न हो जाता है कि इसमें पुरूष को पीछे छोड़कर उससे आगे निकल जाने का प्रयास है किन्तु 'विमर्श' तो चिन्तन का ही एक रूप है जिसके अंतर्गत किसी भी विषय की गहन पड़ताल कर के उसकी अच्छाई और बुराई दोनों पक्ष उजागर किए जाते हैं जिससे विचारों का सही रूप ग्रहण करने में सुविधा हो सके। स्त्री विमर्श के अंतर्गत भी यही सब हो रहा है समाज में स्त्री के स्थान पर चिन्तन, स्त्री के अधिकारों पर चिन्तन, स्त्री की आर्थिक अवस्थाओं पर चिन्तन तथा स्त्री की मानसिक एवं शारीरिक अवस्थाओं पर चिन्तन- इन तमाम चिन्तनों के द्वारा पुरूष के समकक्ष स्त्री को उसकी सम्पूर्ण गरिमा के साथ स्थायित्व प्रदान करने का विचार ही स्त्री विमर्श है। प्राचीन ग्रंथ इस बात के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि वैदिक युग में समाज में स्त्री का विशेष स्थान था। उन्हें यह अधिकार था कि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें, उन्हें यह भी अधिकार था कि वे अविवाहित रह कर अध्ययन एवं आत्मोत्थान के प्रति समर्पित जीवन व्यतीत कर सकें, उन्हें अधिकार था कि वे पुरुषों के समान कार्य करती हुई उन्हीं की भांति सम्मान पा सकें, उन्हें चिकित्सा, नक्षत्र विज्ञान तथा मार्शल आर्ट पढ़ने- सीखने का भी अधिकार था। स्त्रियों के संदर्भ में इतिहास का मध्ययुग वह क्षोभनीय युग था जब विदेशी आक्रांताओं ने देश पर आक्रमण किया और उनके द्वारा अपमानित किए

जाने के भय से स्त्रियों को घरों में 'बंदी' बना दिया गया। उनके अधिकार एक-एक कर के छीन लिए गए, उनकी मनुष्य रूपी स्वतंत्रता के पंख काट दिए गए। सामाजिक जीवन में स्त्रियों की सहभागिता वास्तविक कम और प्रदर्शनीय अधिक रह गई। यहीं से उनके आर्थिक एवं शैक्षिक अधिकारों का हनन आरम्भ हुआ। किन्तु ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ही स्त्रियों को बराबरी के अधिकार दिए जाने के प्रयास शुरू किए गए। राजा राममोहन राय, ऐनी बेसेन्ट, सरोजनी नायडू, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महात्मा फुले आदि ने स्त्रियों को उन कुरीतियों से बचाने के लिए ऐतिहासिक प्रयास किए जिन कुरीतियों के कारण स्त्रियों को सती होना पड़ता था, बहुपत्नी प्रथा की शिकार होना पड़ता था तथा बालविवाह की जंजीरों में जकड़े रहना पड़ता था।

आदिवासी जन, लोक कथाएं और स्त्रियां

आदिवासी क्षेत्रों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति देश के अन्य क्षेत्रों से भिन्न है। यहां भौगोलिक संसाधन तो पर्याप्त हैं किन्तु उनके दोहन की सुविधाएं आज भी पर्याप्त नहीं हैं। आर्थिक स्थिति का सीधा असर सामाजिक स्थिति पर पड़ता है। यदि समाज मुख्यधारा के साथ कदम मिला कर प्रगाति न कर पा रहा हो तो परंपराओं एवं रीति-रिवाजों की भी प्रस्तुति (इंटरप्रिटीशन) गलत अपेक्षाओं के साथ की जाने लगती है। यह तथ्य लोक कथाओं के संदर्भ में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जिस समाज में स्त्री साक्षरता प्रतिशत कम हो उस समाज में जो लोक कथाएं स्त्री के अधिकारों की पैरवी करने वाली हों, उनकी भी व्याख्या समाज में स्त्री को पीछे धकेलने के लिए की जाने लगती है।

लोककथाओं का मूल उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं रहा, इनके माध्यम से अनुभवों का अदान-प्रदान, मानवता की शिक्षा, सद्कर्म का महत्व तथा अनुचित कर्म से दूर रहने का संदेश दिया जाता रहा है।

मुख्य रूप से लोक कथाएं वाचिक परम्परा में प्रवाहमान रहती हैं। इन कथाओं में स्त्री पात्रों की भी विशेष उपस्थिति रहती है। इस तथ्य को इन शब्दों में भी कहा जा सकता है कि लोक कथाओं में स्त्री की भूमिका अकसर प्रभावी रहती है। इसके दो कारण माने जा सकते हैं। पहला कारण यह कि समाज को धर्म के माध्यम से लोक हित से जोड़ने वाली स्त्री ही होती है, वह मां के रूप में भावी पीढ़ी को साहस का पाठ पढ़ाती है, संकट से जूझने की क्षमता प्रदान करती है और उसकी तमाम शक्ति को समाज हित में लगाने की शिक्षा देती है। इस प्रकार वह भावी पीढ़ी को लोक हित का अर्थ समझाती है, सिखाती है और उसमें आस्था उत्पन्न करती है। दूसरा कारण यह कि जिस ग्रामीण लोक से इन कथाओं को स्थापन मिलता है उसमें स्त्री की अपनी अलग सत्ता होती है। भले ही प्रायः वह आर्थिक रूप से पुरुष पर निर्भर हो किन्तु पुरुष की स्त्री धैर्य, साहस और कर्म का प्रतिरुप बन कर एक ऐसी छवि प्रस्तुत करती है जिसके अभाव में समाज का सतत बने रहना कठिन है।

यहां प्रस्तुत है भारत की कुछ बहुप्रचलित आदिवासी लोक कथाओं में स्त्री विमर्श का आकलन हो जनजाति की कथा -

यह जनजाति झारखंड की सिंहभूमि के आसपास बसी हुई है। उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में भी हो जनजाति के परिवार बसे हुए हैं। हो शब्द 'होड़' से बना है जिसका अर्थ होता है 'आदमी'। ये मुख्य रूप में जीवनयापन करते हैं। हो जनजाति की अपनी बोली है जो कोलारियन भाषा समूह में गिनी जाती है। उत्सव प्रेमी यह जनजाति हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अपने पारंपरिक धर्म को मानती है। इस जनजाति में एक कथा प्रचलित है जिसे मैंने शीर्षक दिया है-'राजा चला स्वर्ग की ओर' कथा इस प्रकार है -

सिंहभूमि में एक राज्य था। उस राज्य का राजा विलासी प्रवृत्ति का था। उसी राज्य में एक गरीब जुलाहा रहता था। उस जुलाहे की पत्नी बहुत सुन्दर थी। एक दिन राजा अपने राज्य में भ्रमण पर निकला। उसकी दृष्टि जुलाहे की पत्नी पर पड़ी जो उस समय पानी भर कर लौट रही थी। जुलाहे की पत्नी को देखकर राजा के मन में वासना जाग उठी। उसने जुलाहे और उसकी पत्नी के बारे में पता लगवाया। राजा को जब पता चला कि जुलाहा बहुत गरीब है किन्तु उसके गांव के सभी लोग उसे बहुत प्रेम करते हैं तो राजा को लगा कि यदि वह जुलाहे की पत्नी को बलात् अपने राजमहल में ले जाएगा तो गांव वाले क्रुद्ध हो उठेंगे। अतः राजा ने युक्ति से काम लेने का निश्चय किया।

राजा ने जुलाहे को अपने महल में बुलाया। जुलाहा राजा का आदेश भला कैसे ठुकराता ? वह राजा के सामने उपस्थित हो गया।

'मैंने सुना है कि तुम बहुत साहसी हो इसलिए मैंने तुम्हें एक महत्वपूर्ण काम के लिए चुना है। तुम अभी जाओ और तीन दिन में सियारों के सिर काट कर ले आओ। मुझे एक विशेष अनुष्ठान करना है जिसके लिए मुझे सियारों के सिर की आवश्यकता है।' राजा ने जुलाहे को आदेश दिया, 'यदि तुम हमारे आदेश का पालन नहीं करोगे तो हम तुम्हारा सिर कटवा देंगे।'

मरता क्या न करता। जुलाहा समझ गया कि राजा ने उसकी पत्नी को देख लिया है और इसीलिए उसके मन में खोट आ गया है। अब वह जुलाहे को मरवा कर उसकी पत्नी हड़प लेना चाहता है। जुलाहा दुखी मन से घर लौटा। पत्नी ने जुलाहे को देखा तो उसके दुख का कारण पूछा। जुलाहे ने राजा के आदेश और उसकी कुदृष्टि के बारे में पत्नी को बताया।

'आप चिन्ता न करें सब ठीक हो जाएगा।' पत्नी ने जुलाहे को ढाढस बंधाया।

'क्या ठीक हो जाएगा ? मैंने आज तक एक खरगोश तक तो मारा नहीं, मैं तीन दिन में तीस सियारों का सिर कैसे हासिल कर पाऊंगा।' जुलाहे ने चिन्तित होते हुए कहा, 'राजा मुझे मरवाए बिना नहीं छोड़ेगा।'

'आपको कुछ नहीं होगा। जैसा- जैसा मैं कहूं वैसा-वैसा आप करते जाइए।' जुलाहे की पत्नी ने कहा । वह बहुत समझदार स्त्री थी।

पत्नी के कहने पर जुलाहा जंगल में गया और उसने एक इतनी लम्बी सुरंग खोद डाली कि जिसमें तीस सियार आ सकें। इसके बाद दूसरी सुरगं खोदने का अभिनय करने लगा। सियारों का मुखिया बहुत देर से जुलाहे को सुरंग खोदते देख रहा था। जब जुलाहा दूसरी सुरंग खोदने लगा तो वह उत्सुकतावश झाड़ियों से बाहर निकल आया।

'तुम ये सुरंगे क्यों खोद रहे हो ?' मुखिया सियार ने जुलाहे से पूछा।

'अरे ? तुम्हें पता नहीं है क्या कि आकाश से आग बरसने वाली है ? इसीलिए मैं सुरंग खोद रहा हूं। जब आग बरसेगी तो मैं इसमें छिप कर बच जाऊंगा।' जुलाहे ने कहा।

'लेकिन तुम्हारे लिए तो ये एक सुरंग पर्याप्त है फिर ये दूसरी क्यों खोद रहे हों ?' मुखिया सियार ने पूछा।

'मुझे बोंगा देव (देवता) ने आदेश दिया है कि पहले दूसरों के लिए सुरंग खोदो फिर अपने लिए। इसीलिए मैंने ये एक सुरंग खोद ली और अब ये दूसरी खोद रहा हूं।' जुलाहे ने कहा।

'भैया, तुम तो बड़े परोपकारी जीव हो। मैं सियारों का मुखिया हूं। क्या हम सियार तुम्हारी इस सुरंग में छिप सकते हैं।' मुखिया सियार ने पूछा।

'क्यों नहीं ? खुशी से इसमें छिपो।' जुलाहे ने कहा। उसी समय जुलाहे की पत्नी जो एक पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठी थी और जिसने एक मिट्टी के बरतन में थोड़े अंगारे रखे हुए थे, ऊपर से अंगारे बरसाने शुरु कर दिए।

'भागो ! छिपो ! आकाश से आग बरसने लगी।' जुलाहा चिल्लाया और अपनी छोटी-सी सुरंग में घुस गया। यह देख कर मुखिया सियार को विश्वास हो गया कि आकाश से आग बरसने लगी है। उसने 'हुआ-हुआ' करके अपने सभी सियारों को बुलाया और वह भी अपने साथियों सहित जुलाहे द्वारा खोदी गई बड़ी सुरंग में घुस गया। जैसे ही सारे सियार सुरंग में घुसे, वैसे ही जुलाहा अपनी छोटी सुरंग से बाहर निकला और उसने सियारों वाली सुरंग के मुंह को बड़े-से पत्थर से ढांक दिया।

थोड़ी देर बाद जुलाहे ने सुरंग के पत्थर को तनिक सरकाया और सियारों से बोला, 'अब आकाश से आग बरसना बंद हो गई है। अब तुम लोग एक-एक कर के सुरंग के बाहर आ जाओ।'

सियार एक-एक कर के बाहर आते गए और जुलाहा उनका सिर काटता गया। इस प्रकार कुल तीस सियारों के सिर इकट्ठे हो गए। इसके बाद जुलाहे की पत्नी पेड़ से नीचे उतर आई। जुलाहे ने उसकी टोकरी में सियारों के सिर रखे और चल पड़ा अपने गांव की ओर। उसने पहले अपनी पत्नी को घर छोड़ा और फिर सियारों के सिर ले कर राजा के पास पहुंचा। राजा ने सिरों की गिनती की। पूरे तीस निकले। राजा झुंझला उठा। उसकी योजना विफल हो गई थी। इस पर राजा ने दूसरी योजना बनाई और जुलाहे को अपने पास बुलाया।

'जुलाहे, तुम बहुत बहादुर हो। तुम मेरे लिए तीस सियारों के सिर लाए। अब मैं चाहता हूं कि तुम मेरे लिए एक लोटा शेरनी का दूध ला दो जिससे मैं एक और अनुष्ठान कर सकूं।' राजा ने जुलाहे से कहा, 'यदि तुम मेरे आदेश का पालन नहीं करोगे तो मैं तुम्हें मृत्युदण्ड दूंगा और तुम्हारे परिवार को राजसात कर लूगां।'

जुलाहा एक बार फिर मुंह लटकाए अपने घर पहुंचा। जुलाहे की पत्नी ने उससे उसके दुख का कारण पूछा। जुलाहे ने राजा के नए आदेश के बारे में बताया।

'आप चिन्ता मत करिए। सब ठीक हो जाएगा।' पत्नी ने जुलाहे को ढाढस बंधाया।'

'क्या ठीक हो जाएगा ? पिछली बार तो फिर भी सियारों का मामला था किन्तु इस बार शेरनी का दूध लाने का प्रश्न है। यह मुझसे नहीं हो सकेगा।' जुलाहे ने चिन्तित हो कर कहा।

'बोंगा देव सब ठीक करेंगे ! अब तो बस वैसा करिए, जैसा मैं कहूं।' जुलाहे की पत्नी ने कहा। इसके बाद जुलाहे की पत्नी ने दूध डाल कर मीठे पुए पकाए और कपड़े की एक पोटली में बांध कर जुलाहे को दे दिया। उसने वह सब जुलाहे को समझा दिया जो उसे करना था।

जुलाहा मीठे पुए की पोटली ले कर चल पड़ा। जंगल में पहुंच कर उसे एक शेरनी दिखाई दी जो अपने शावकों को दुलार कर शिकार पर चली गई। शेरनी के जाने के बाद जुलाहा शावकों के पास पहुंचा।

'आप कौन हैं ? शावकों ने पूछा।'

'मैं तुम्हारा मामा हूं।' जुलाहे ने कहा।

'अरे वाह ! आप तो दो पैरों वाले हैं फिर भी हमारे मामा हैं । आप हमारे लिए क्या लाए हैं ?' शावकों ने मचलते हुए पूछा।

'मैं तुम लोगों के लिए पुए लाया हूं। लो, खा लो !' जुलाहे ने पुए शावकों को दे दिए। शावकों ने कभी पुए नहीं खाए थे। उन्हें पुए अत्यंत

स्वादिष्ट लगे। उन्होंने पेट भर कर पूए खा लिए और जुलाहे के साथ खेलने लगे। थोड़ी देर में शेरनी शिकार कर के लौटी। शेरनी को आते देख कर जुलाहा एक पेड़ के पीछे छिप गया।

'आओ बच्चो, दूध पी लो।' शेरनी ने शावकों से कहा।

'नहीं, पुए खा कर हमारा पेट भर गया है।' शावकों ने उत्तर दिया।

'पुए ? कौन लाया था पुए ?' शेरनी ने चकित हो कर पूछा।

'दो पैर वाले मामा लाए थे। वे हैं उधर पेड़ के पीछे।' शावकों ने उत्साहित हो कर बताया। तब तक जुलाहा भी पेड़ के पीछे से निकल आया।

'मैंने तुम्हारे बच्चों को भूखे देखा तो मैंने इन्हें पुए खिला दिए। बच्चों ने पूछा मैं कौन हूं तो मैंने उन्हें कह दिया कि तुम्हारा मामा हूं ताकि वे डरें नहीं।' जुलाहे ने शेरनी को बताया।

'तुमने मेरे बच्चों की भूख शांत कर के बड़ा नेक काम किया है। बताओ मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूं ? शेरनी ने पूछा।

'मुझे अपनी जान बचाने के लिए तुम्हारा दूध चाहिए।' जुलाहे राजा के आदेश के बारे में शेरनी को बताया। शेरनी ने प्रसन्नतापूर्वक एक लोटा दूध दे दिया। जुलाहा दूध ले कर राजा के पास पहुंचा। राजा ने शेरनी का दूध देखा तो वह झल्ला उठा। उसकी दूसरी योजना भी विफल हो गई। अब राजा ने सोचा कि इस जुलाहे को सीधे-सीधे मरवाना ही होगा।

उधर जुलाहा अपने घर पहुंचा तो उसकी पत्नी ने उसे समझाया कि राजा से पीछा छुड़ाना इतना आसान नहीं है। वह अतंतः जुलाहे को मरवा कर ही मानेगा। अतः राजा कोई नया दांव खेले इसके पहले राजा को मारना होगा। इसके लिए जुलाहे की पत्नी ने एक योजना बनाई और जुलाहे को सिखा-पढ़ा कर राजा के पास भेज दिया।

'महाराज ! मैं आज आपसे अंतिम विदा लेने आया हूं।' जुलाहे ने राजा से कहा।

'हैं ? अंतिम विदा?' राजा चकित रह गया।

'हां, महाराज! मुझे सशरीर स्वर्ग जाने का रास्ता मिल गया है। अब मैं स्वर्ग में जा कर रहूंगा। वहां एक से बढ़ कर एक सुन्दर अप्सराएं हैं। मैं उनके साथ जीवन बिताऊगां।' जुलाहे ने चटखारे लेते हुए कहा।

'एक से बढ़ एक सुन्दर अप्सराएं?' विलासी राजा सुन्दर अप्सराओं की चर्चा सुन कर लालायित हो उठा।

'जी महाराज !'

'प्रत्येक सुन्दर वस्तु पर राजा का अधिकार पहले होता है अतः मैं तुमसे पहले वहां जाऊंगा। तुम मुझे स्वर्ग जाने का रास्ता जाने का रास्ता बताओ।' राजा ने कहा।

'किन्तु महाराज........'

'चुप रहो ! तुमने यदि मुझे स्वर्ग का रास्ता नहीं दिखाया तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।' राजा ने जुलाहे को डांटते हुए कहा।

'जैसी आपकी आज्ञा।' जुलाहे ने प्रत्यक्षतः दुखी होते हुए बोला।

इसके बाद जुलाहा राजा को ले कर जंगल में बने एक कुएं के पास पहुंचा।

'महाराज ! इसी कुएं से हो कर जाता है स्वर्ग का रास्ता।' जुलाहे ने राजा से कहा।

राजा ने आव देखा न ताव और कुएं में छलांग लगा दी। कुआं था अथाह गहरा। राजा जैसे ही कुए में कूदा वैसे ही जुलाहे की पत्नी भी कुए के पास आ गई और पति-पत्नी दोनों ने मिल कर कुएं को एक बड़े पत्थर से ढ़ाक दिया। इसके बाद दोनों घर को लौट कर खुशी-खुशी रहने लगे।

इस कहानी में स्त्री की बुद्धि को अधिक आंका गया है। संकट के समय स्त्री बुद्धि से काम लेती है और पुरुष आवेश से। यदि इस कहानी को शहरी समाज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो 'तुम औरतें बेवकूफ होती हो!' कहने वाले पुरुष बर्बर आदिम युग के और हो आदिवासी प्रबुद्ध विचारधारा के सिद्ध होंगे।

संथाल कथा-

संथालों का मुख्य निवास झारखण्ड, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा है। त्रिपुरा में भी संथाल परिवार बसे हुए हैं। यद्यपि इनकी मुख्य भूमि छोटा नागपुर का पठार है। संथालों की अपनी बोली तथा लिपि है। इनका अपना संथाली साहित्य है। संथाली के अतिरिक्त इनकी संपर्क भाषा हिन्दी, बंगाली और उड़िया है। आदिकाल में ये आखेट एवं वनोपज द्वारा अपना उदरपोषण किया करते थे फिर ये कृषिकार्य में प्रवृत्त हुए तथा वर्तमान में इनमें शिक्षा का प्रसार होने से आजीविका के अन्य साधनों की ओर भी इनका रुझान बढ़ा है। पारंपरिक धर्म के अनुसार इनके प्रमुख देवता हैं- चांदो देव तथा बोंगा देव।

इस जनजाति में एक कथा कही-सुनी जाती है - 'दुष्ट मेढ़ा'।

एक गांव में एक बुढ़िया रहती थी। वह बहुत गरीब थी और जैसे-तैसे अपना भरण-पोषण करती थी। एक बार गांव में एक मेला लगने वाला था। बुढ़िया ने सोचा कि यदि मैं इस मेले में अच्छी-अच्छी मिठाइयां बना कर बेचूं तो अच्छी आमदनी होगी और कुछ दिन आराम

से कट जाएंगे। यह विचार कर के बुढ़िया ने साहूकार से उधार लिया और सामान खरीद कर ढेर सारी अच्छी-अच्छी मिठाइयां बना डालीं।

मिठाइयां बनाने के बाद बुढ़िया ने विचार किया कि नदी में जा कर नहा लूं फिर दो रोटियां खा लूं, उसके बाद मिठाइयां ले कर मेले में चली जाऊं। इधर बुढ़िया नदी में नहाने गई और उधर एक दुष्ट मेढ़ा बुढ़िया की झोपड़ी में घुस गया। उसने झोपड़ी में अच्छी-अच्छी मिठाइयां रखी देखीं तो उसके मुंह में पानी आ गया। उसने कुछ मिठाइयां खा लीं। तभी बुढ़िया नहा कर लौट आई। उसे अपनी झोपड़ी में किसी की आहट मिली तो वह डर गई।

'मेरी झोपड़ी में कौन है ? बाहर निकल नहीं तो मैं बहुत मारूंगी।' बुढ़िया ने साहस कर के चिल्ला कर कहा।

'तू मुझे क्या मारेगी बुढ़िया ? तू मेरी ताकत के बारे में नहीं जानती है। मैं हाथी के दोनों दांत तोड़ सकता हूं। मैं शेर की मूंछें उखाड़ सकता हूं और सांप को रस्सी बना कर उससे पानी निकाल सकता हूं। चल, अब भाग जा यहां से।' दुष्ट मेढ़े ने बुढ़िया को डराते हुए कहा।

मेढ़े की बात सुन कर बुढ़िया डर गई। उसे समझ में नहीं आया कि यह मेढ़ा है, उसे लगा कि उसकी झोपड़ी में कोई राक्षस घुस गया है। बुढ़िया ने गांव वालों से मदद मांगी किन्तु जो भी जाता उसे मेढ़ा डींगें हांक कर डरा देता। निराश हो कर बुढ़िया ने एक-एक कर के हाथी, शेर, और सांप से मदद मांगी किन्तु वे भी नहीं समझ पाए कि बुढ़िया के घर में राक्षस नहीं मेढ़ा घुसा है। वे तीनों भी डर कर भाग गए।

अब बुढ़िया बड़ी परेशान हुई। उसे लगा कि वह दूसरे गांव तक जाएगी और यदि वहां के लोगों ने भी मदद नहीं की तो जाना और आना ही हाथ आएगा। यदि मिठाई नहीं बेच पाई तो न तो पैसे मिलेंगे और न उधार चुकता कर सकूंगी। फिर साहूकार मेरी झोपड़ी हड़प लेगा और मैं बेघर हो जाउंगी और इस सारी मुसीबत की जड़ यह राक्षस है। बुढ़िया ने सोचा और उसे राक्षस रूपी मेढ़े पर क्रोध आने लगा उसने आव देखा न ताव और एक मोटा-सा डंडा उठा कर अपनी झोपड़ी में घुस गई। जैसे ही उसे मेढ़ा दिखाई दिया उसने मेढ़े पर दनादन-दनादन डंडे बरसाने शुरू कर दिए। दस-बारह डंडे खा कर ही मेढ़े के प्राण-पखेरू उड़ गए।

मेढ़े के मरने के बाद बुढ़िया ने बची हुई मिठाइयां समेटी और उन्हें मेले में बेचने निकल पड़ी।

स्त्री चाहे किसी भी आयु की क्यों न हो अर्थात् वृद्धा भी हो फिर भी यदि संकट कोई दूर नहीं कर पाता है तो वह आर या पार की लड़ाई लड़ने से भी नहीं हिचकती है। संथाल कहानी की बुढ़िया स्त्री के साहस की पर्याय है।

अंडमानी कथा-

'अंडमानी' शब्द चार अंडमानी जनजातीय समूहों के लिए प्रयुक्त होता है। ये चार समूह हैं- ग्रेट अंडमानी, ओंगी, जारवा तथा सेंटिनली। इनका प्रमुख देवता 'पुलुगा' है। अंडमानियों में यह मान्यता है कि पुलुगा ने ही प्रथमपुरूष के रूप में तोमो को पैदा किया। अंडमानी जनजाति में प्रमुख सात समुदाय हैं- अकाबोआ, अकाकोरा, अकाजेरू,अकावी आदि।

अंडमान के हैवलाक द्वीप में परी राजकुमारी की कथा बहुप्रचलित है। यह कथा एक ऐसी प्रेयसी और पत्नी की कथा है जो जीवन भर अपने प्रिय पति की प्रतीक्षा करती रहती है।

यह कथा उस समय की है जब हैवलाक द्वीप का नाम हैवलाक नहीं पड़ा था। उन दिनों इस द्वीप पर मनुष्यों का वास नहीं था। यहां केवल सुन्दर परियां आया करती थीं। वे हैवलाक में स्थित सरोवर में नहातीं, खेलतीं और खिलखिलातीं। उन परियों की राजकुमारी उन सबसे सुन्दर और विशेष शक्ति युक्त थी। वह जहां भी जाती वहां का वातावरण प्रकाशित हो उठता। राजकुमारी जब भी अपनी सखियों के साथ हैवलाक आती तो हैवलाक का वातावरण सुन्दरता और प्रकाश से भर जाता। राजकुमारी की इस विशिष्टता को ले कर उसके माता-पिता चिन्तित रहते और उसे दिन में महल से निकलने नहीं देते। रात्रि को ही वह हैवलाक आ पाती।

राजकुमारी बहुत दयालु और संवेदनशील थीं। उससे किसी का दुख देखा नहीं जाता। यदि तितली या जुगनू भी दुखी होते तो राजकुमारी उनके दुख को दूर करने का पूरा-पूरा प्रयास करती।

एक बार हैवलाक के समुद्र तट पर भयावह तूफान आया। राजकुमारी की सखियों ने ऐसे तूफान में हैवलाक द्वीप पर जाने से मना कर दिया। राजकुमारी हैवलाक जाना चाहती थी। अतः उसने अकेले ही जाने का निश्चय किया। उस समय हैवलाक में तूफान के कारण गहन अंधकार छाया था। राजकुमारी के वहां पहुंचते ही समूचा द्वीप प्रकाशित हो उठा। राजकुमारी ने अपने पंख एक ओर रखे और सरोवर में उतर कर नहाने लगी। नहाने के बाद वह जब सरोवर से बाहर निकली तो उसने देखा की सरोवर के पास एक युवक मूर्छित पड़ा हुआ है। वह युवक बहुत सुन्दर था। राजकुमारी ने तब तक ऐसे किसी युवक को देखा ही नहीं था। इतने सुन्दर युवक को इस तरह मूर्च्छित देख कर राजकुमारी का मन द्रवित हो उठा और उसने सरोवर का जल युवक के चेहरे पर छिड़का। युवक की मूर्छा टूट गई वह उठ बैठा। होश में आते ही अपने सामने एक अत्यंत रूपवती युवती को देख कर वह युवक ठगा-सा रह गया।

कुछ पल बाद उसने राजकुमारी से पूछा कि वह कौन है ?

'मैं एक राजकुमारी हूं और यह द्वीप मेरा है।' राजकुमारी ने बताया।

'मैं भी एक राजकुमार हूं। मेरा देश पूर्व दिशा में है। मैं अपने जहाज पर सवार हो कर समुद्री यात्रा पर निकला था। अचानक तूफ़ान आ जाने के कारण मेरा जहाज समुद्र में डूब गया। मेरे साथी भी डूब गए। मैं किसी तरह इस द्वीप पर आ गया। शायद लहरों ने मुझे यहां पहुंचा दिया।' उस युवक ने बताया।

'तुम चिन्ता मत करो ! जब तक तूफ़ान थम नहीं जाता है तब तक तुम इस द्वीप पर रहो। मैं प्रतिदिन तुमसे मिलने आया करूंगी।' राजकुमारी ने कहा।

राजकुमारी अपने वचन के अनुसार राजकुमार से मिलने के लिए प्रतिदिन हैवलाक द्वीप पर आने लगी। इस समीपता के परिणामस्वरूप राजकुमारी के हृदय में प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित हो गया। वह राजकुमार से बहुत प्रेम करने लगी। कुछ दिन बाद तूफ़ान थम गया। अब राजकुमार ने अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की।

'मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान हूं। मेरे न लौटने से मेरे माता-पिता दुखी होंगे और मेरा राज्य संकट से घिर जाएगा अतः मुझे अपने राज्य लौटना होगा। फिर मुझे अपने माता-पिता के पास जा कर तुम्हारे साथ अपने विवाह की अनुमति भी लेनी है।' राजकुमार ने कहा।

विवाह की बात सुन कर राजकुमारी लजा गई।

'हां, तुम्हें अपने-माता-पिता से मिलने अवश्य जाना चाहिए किन्तु वादा करो कि तुम मुझे अपने साथ ले जाने वापस आओगे।' राजकुमारी ने भावुक होते हुए कहा।

'मैं वादा करता हूं कि मैं वापस आऊंगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा लेकिन........।' कहते-कहते राजकुमार रुक गया। उसका चेहरा उदास हो गया।

'क्या हुआ ? तुम कहते 'कहते रुक क्यों गए ? अपनी बात पूरी करो।' राजकुमारी ने कहा।

'नहीं जाने दो।' राजकुमार ने टालने का प्रयास किया।

'नहीं, इस तरह बात अधूरी छोड़ना ठीक नहीं होता है। अपनी बात पूरी करो।' राजकुमारी ने आग्रह किया।

'मैं जाना तो चाहता हूं किन्तु जाऊंगा कैसे ? न तो मेरे पास जहाज है न ही कोई और साधन।' राजकुमार ने उदास होते हुए कहा।

'हां यह तो तुमने सही कहा।' राजकुमारी भी चिन्तित हो उठी।

'यदि तुम चाहो तो मेरी मदद कर सकती हो।' राजकुमार झिझकते हुए बोला।

'हां-हां, कहो मुझे क्या करना होगा ?'

'तुम मुझे अपने पंख दे दो। मैं इन्हें लगा कर अपने देश चला जाऊंगा और माता-पिता से मिल कर अपना जहाज ले कर तुम्हारे पास आ कर तुम्हें तुम्हारे पंख लौटा दूंगा।' राजकुमार ने कहा।

'मेरे पंख ही मेरे परी होने की पहचान हैं। इन्हीं में मेरी शक्तियां और मेरा प्रकाश है। किन्तु मैं तुमसे इतना प्रेम करती हूं कि मैं सहर्ष तुम्हें अपने पंख दे रही हूं। यद्यपि पंखो के बिना मेरे माता-पिता और मेरी सखियां भी मुझे स्वीकार नहीं करेंगी।' राजकुमारी ने कहा और अपने पंख निकाल कर राजकुमार को दे दिए।

राजकुमार ने पंख लगा लिए। राजकुमारी ने पंखों का प्रयोग करना सिखा दिया। इसके बाद राजकुमार ने परी राजकुमारी से विदा ली और अपने देश की ओर उड़ गया। राजकुमार के जाते ही राजकुमारी पंखविहीन हो गई जिससे हैवला द्वीप पर अंधेरा छा गया।

दिन बीते, माह बीते, वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु राजकुमार लौट कर नहीं आया। परी राजकुमारी द्वीप में सरोवर के पास अकेली घूमती और राजकुमार के लौटने की प्रतीक्षा करती। जब धीरे-धीरे मनुष्यों ने हैवलाक की धरती पर आना-जाना शुरू किया तो परी राजकुमारी अदृश्य हो कर भटकने लगी। वह आज भी राजकुमार के लौटने की प्रतीक्षा कर रही है। अंडमानी आदिवासियों में यह विश्वास प्रचलित है कि हैवलाक द्वीप के सरोवर के किनारे राजकुमारी के सरोवर के पानी से भीगे हुए पदचिन्ह दिखाई देते हैं।

यह कथा प्रेम के नाम पर स्त्री के साथ किए जाने वाले छल की मार्मिक कहानी है, साथ ही इस बात की भी कि कोमल हृदय स्त्री अपने साथ छल करने वाले की भी प्रतीक्षा करती है, उससे प्रेम करती है।

बैगा लोककथा

यह जनजाति मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के मंडला, बालाघाट, शहडोल ज़िले तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, दुर्ग एवं राजनंदगांव जिले में बसी हुई है। महाराष्ट्र, बिहार, और उड़ीसा में भी ये अल्पसंख्या में बसे हुए हैं। बैगा मध्यप्रदेश के पुरातन आदिवासियों में से एक है। मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के मंडला, समनापुर, डिंडोरी, बालाघाट, सरगुजा, बिलासपुर तथा अमरकंटक में इनका निवास है। इनके प्रमुख देवता हैं- बड़ा देव, दुलहा देव, बूढ़ा माई, एवं नांगा बैगिन। बैगा जनजाति में लोकसंस्कृति की समृद्ध परम्परा है। इनके धार्मिक विश्वासों में जादू-टोने तथा अलौकिकता का विशेष स्थान रहता है। झाड़-फूंक करने वाले 'गुनिया' कहलाते हैं।

बैगा जनजाति में प्रचलित नांगा बैगा-नांगा बैगिन की कथा पृथ्वी और मनुष्य की उत्पति में स्त्री की भूमिका की व्याख्या करती है।

एक बार भगवान ने विचार किया कि मैंने इतनी सुन्दर पृथ्वी बनाई है लेकिन उसमें कोई हलचल नहीं है। वह बहुत सूनी प्रतीत होती है। तब भगवान ने सोचा कि ऐसा समझदार जीव बनाया जाए जिससे पृथ्वी सुन्दर लगने लगे और रोचक हो जाए। बहुत सोचने -विचारने के बाद भगवान ने एक पुरूष बनाया और उसे पृथ्वी पर भेज दिया। वह पुरूष था नांगा बैगा। इस प्रकार प्रथम बैगा का जन्म हुआ। वह वस्त्रों से अनभिज्ञ था इसलिए वह निर्वस्त्र रहता था और इसीलिए आगे चल कर वह नांगा बैगा देव के रूप में पूज्य हुआ।

नांगा बैगा नदी के किनारे और सघन वन में विचरण करता। कुछ दिन बाद भगवान को याद आया कि उसने एक मनुष्य को पृथ्वी पर भेजा था, देखा जाए वह क्या कर रहा है ? भगवान ने जिज्ञासा वश देखा तो उन्हें यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि नांगा बैगा उदास घूम रहा है। भगवान नांगा बैगा के पास पहुंचे और उससे उसकी उदासी का कारण पूछा।

'आपने मुझे यहां भेज तो दिया है लेकिन यहां ऐसा कोई नहीं है जिससे मैं बातचीत कर सकूं।' नांगा बैगा ने भगवान को उलाहना दिया।

इस पर भगवान ने सोच-विचार कर एक स्त्री की रचना की और उसे पृथ्वी पर भेज दिया। वह स्त्री थी प्रथम बैगा स्त्री अर्थात् नांगा बैगिन। वह भी निर्वस्त्र थी। वह भी जंगल में विचरण करने लगी।

एक दिन अचानक नांगा बैगा ने नांगा बैगिन को देखा तो वह चौंक गया। नांगा बैगिन उसे कुछ-कुछ अपने जैसी ही लगी । बस थोड़ी शारीरिक संरचना भिन्न थी। इससे नांगा बैगा के मन में कौतूहल जागा। इसी प्रकार जब नांगा बैगिन की दृष्टि नांगा बैगा पर पड़ी तो वह भी चकित रह गई। उसके मन में भी जिज्ञासा ने जन्म लिया। अब तक नांगा बैगिन भी अकेली घूमती-भटकती उकता गई थी। दोनों एक-दूसरे के निकट पहुंचे। दोनों ने एक दूसरे के बारे जानना चाहा। परस्पर चर्चा करने पर पता चला कि दोनों की एक ही कहानी थी। दोनों को भगवान ने बना कर पृथ्वी पर भेजा था । दोनों साथ-साथ रहने लगे, साथ-साथ घूमने लगे।

कुछ दिन बाद भगवान ने सोचा कि देखा जाए कि नांगा बैगा और नांगा बैगिन क्या कर रहे हैं और पृथ्वी पर कोई हलचल हो रही है या नहीं ? भगवान ने जब पृथ्वी की ओर देखा तो नांगा बैगिन साथ-साथ घूमते तो दिखे किन्तु पृथ्वी पर कोई हलचल नहीं दिखी। अब मात्र दो प्राणी कितनी हलचल मचा लेते ? भगवान ने बहुत सोच-विचार किया और फिर एक मंत्र पढ़ा और पृथ्वी की ओर फूंक मारी। जैसे ही मंत्र नांगा बैगा और नांगा बैगिन के पास पहुंचा वैसे ही उन दोनों के मन में परस्पर एक-दूसरे के शारीरिक अंगो को छू कर जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

'हम दोनों एक जैसे दिखाई देते हैं फिर भी हमारे शरीर में कुछ भिन्नता है। मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हारे शरीर को छू कर देखूं कि यह कैसी भिन्नता है।' नांगा बैगा ने नांगा बैगिन से कहा।

'मैं भी यही चाहती हूं कि मैं तुम्हारे शरीर को छू कर देखूं। नांगा बैगिन ने कहा।

दोनों ने एक-दूसरे को छूना और जानना चाहा जिसके परिणाम स्वरूप नांगा संतति का जन्म हुआ।

कुछ समय बाद भगवान ने नांगा बैगा और नांगा बैगिन का हालचाल जानने के लिए पुनः पृथ्वी की ओर देखा। भगवान यह देख कर बहुत चकित रह गए कि बैगाओं के रूप में पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ गई थी और पृथ्वी पर हलचल हो रही थी। पृथ्वी को पूर्ण करने, रोचक बनाने और सुन्दर बनाने का भगवान का उद्देश्य इस प्रकार पूरा हो गया।

इस बैगा कथा में मानव की उत्पत्ति, संसार की रचना के साथ ही मानव की कामप्रवृति को बड़े ही सहज ढंग से वर्णित किया गया है। संसार और समाज में स्त्री के महत्व को रेखांकित करता यह तथ्य भी इस कहानी में है कि भगवान को भी समझ में आ गया कि उसने पुरूष के साथ स्त्री की रचना करके मनुष्य रूपी अपनी कृति को अमरत्व प्रदान कर दिया है अन्यथा अकेला पुरुष मनुष्य की संसृति को आगे नहीं बढ़ा सकता था।

गोण्ड कथा-

गोण्ड जनजाति मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में मुख्यरूप से बसी हुई है। इनका इतिहास एक गौरवमय इतिहास है। मध्ययुग में गोण्डों के अनेक राजवंश हुए जिन्होंने भारत के मध्यक्षेत्र के विभिन्न स्थलों पर सफलतापूर्वक शासन किया। रानी दुर्गावती भी एक गोण्ड शासिका थीं। गोण्ड समाज पितृ-सत्तात्मक है। वे पुरुष को बीज और स्त्री को खेत मानते हैं। इनके प्रमुख देवी-देवता हैं- बड़ा देव, बूढ़ी माई, कंकालिन माता। गोण्डों की बोली गोण्डी के नाम से जानी जाती है। इनकी लोकगाथाओं में पंडवानी सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इनमें गोदना गुदवाने का चलन बहुत अधिक है।

गोण्ड जनजाति में गोदना अथवा टैटू के जन्म की कथा स्त्री की सजगता और पुरुषों की लम्पट मनोवृत्ति से रक्षा की दिलचस्प कथा है- **अनोखी भूल**।

एक बार शिव और पार्वती ने सभी देवी-देवताओं को अपने घर भोज पर आमंत्रित किया। भोज में सभी देवी-देवता पहुंचे। गोण्ड देवता भी अपनी पत्नी सहित भोज में सम्मिलित हुए। जब बहुत देर हो गई

तो गोण्ड देवता ने सोचा कि अब घर लौटना चाहिए। वे अपनी पत्नी को ढूंढने लगे। भोज में उपस्थित सभी देवियां एक जैसी दिखाई पड़ रही थीं। उन्होंने लगभग एक जैसे वस्त्र पहन रखे थे। गोण्ड देवता अपनी पत्नी को पहचान नहीं पा रहे थे।

उलझन में पड़े हुए गोण्ड देवता को एक देवी अपनी पत्नी जैसी दिखाई पड़ी। वह पीठ कर के खड़ी थी। गोण्ड देवता आगे बढ़े और उन्होंने उस देवी के कंधे पर हाथ रखा।

'बहुत देर हो गई है। अब घर लौटना चाहिए।' गोण्ड देवता ने कहा।

गोण्ड देवता का स्वर सुन कर और अपने कंधे पर हाथ स्पर्श पर कर उस देवी ने पलट कर देखा। उस देवी को देख कर गोण्ड देवता सन्न रह गए। वह उनकी पत्नी नहीं अपितु साक्षात पार्वती थीं। पार्वती को गोण्ड देवता के दुस्साहस पर बहुत क्रोध आया। वे आगबबूला हो उठीं।

'तुमने मुझे स्पर्श कैसे किया ? तुम्हारा ये साहस !' पार्वती ने आंखे लाल करते हुए कहा।

गोण्ड देवता यह बताना चाह रहे थे कि उन्होंने भूलवश ऐसा किया किन्तु पार्वती उनकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं थीं। कोलाहाल सुन कर शिव आ गए।

'क्या बात है ? ये कोलाहाल कैसा ?' उन्होंने पार्वती से पूछा।

'गोण्ड देवता ने मुझे स्पर्श किया। मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा।' पार्वती ने रुष्ट होते हुए कहा।

'ऐसा क्यों किया आपने ?' शिव ने गोण्ड देवता से पूछा।

'ऐसा मुझसे भूलवश हुआ। चूंकि यहां उपस्थित सभी देवियां एक जैसी दिखाई पड़ रही थीं अतः देवी पार्वती को मैं भूलवश अपनी पत्नी समझ बैठा। मैंने ऐसा जानबूझ कर नहीं किया है।' गोण्ड देवता ने शिव को बताया।

इस पर शिव ने पार्वती को समझा-बुझा कर शांत किया। शांत होने पर पार्वती को लगा कि गोण्ड देवता ने तो यह कृत्य भूलवश किया है किन्तु मनुष्यों में यह प्रवृति लम्पटता और छेड़-छाड़ को जन्म देगी। आखिर यह सारी गड़बड़ी इस लिए हुई क्योंकि सभी देवियां एक जैसी दिखती हैं। पृथ्वी पर रहने वाली स्त्रियां भी एक जैसी दिखती हैं और पुरुष इस भ्रम का लाभ उठाते रहेंगे। अतः उन्होंने सभी देवियों की अलग-अलग पहचान के लिए एक उपाय सोचा।

उन्होंने चित्रकार को बुलाया और सभी देवियों के शरीर पर भिन्न-भिन्न प्रकार का गोदना गोदवा दिया। इस प्रकार सभी देवियों की अलग-अलग पहचान स्थापित हो गई। इसके बाद गोण्ड देवी ने स्त्रियों को निर्देश दिया कि वे अपनी अलग-अलग पहचान के लिए अपने शरीर पर अलग-अलग ढंग के गोदने गोदवाएं। इस प्रकार गोण्डों में गोदना प्रथा प्रारम्भ हुई।

इस कथा के मूल में अपनीं अलग पहचान स्थापित करना तथा संदेह का लाभ उठा कर छेड़-छाड़ करने वाले पुरुषों से स्वयं को बचाने का एक भोला-भाला किन्तु सजग तरीका सामने आता है।

कुरुम्बा कथा -

यह केरल में निवास करने वाली जनजाति है। ये कई समुदायों में बंटी हुई है जैसे अलु कुरुम्बा, बेट्टा कुरुम्बा, जेनु कुरुम्बा आदि। ये पर्वतों के निचले क्षेत्रों तथा वनों में रहते हैं। इनका मुख्य व्यवसाय आखेट तथा वनोपज संग्रहण रहा है। अब ये पशुपालन तथा कृषिकार्य भी करते हैं। चाय एवं कॉफी के बागानों में भी काम करतें हैं। यह माना जाता है कि आरम्भ में कुरुम्बा गुफाओं में एकान्त जीवन व्यतीत करते थे। इनका धार्मिक मुखिया 'कानी कुरुम' के नाम से जाना जाता है। ये जादू-टोने पर विश्वास करते हैं। कुरुम्बा बोली द्रवीड़ियन भाषा समूह की है।

कुरुम्बाओं में एक कथा प्रचलित है - कुझाली।

नीलगिरि की घाटी में वह गांव कुरुम्बा आदिवासियों का था। उस गांव के लोग जंगल से जड़ी-बूटी और शहद एकत्र कर के उसे पास के शहर में बेच कर अपना जीवनयापन करते थे। उसी गांव में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था कुझाली। यथा नाम तथा गुण। कुझाली का अर्थ होता है बांसुरी। अपने नाम के अनुरूप उसका स्वर बांसुरी के समान मधुर था। जब वह बोलती थी तो पक्षी चहकने लगते थे। झरने गीत गाने लगते थे और पेड़-पौधे झूमने लगते थे।

कुझाली जिस जगंल में शहद एकत्र करने जाती थी उस जंगल में एक जादूगरनी रहती थी। एक बार जादूगरनी ने कुझाली को गीत गाते सुन लिया। उसे लगा कि कुझाली के स्वर के जादू के सामने उसका जादू कुछ भी नहीं है। अतः उसने कुझाली को बंदी बना लिया और जंगल के बीचो-बीच एक ऊंची मीनार बना कर उसमें रख दिया। मीनार इतनी ऊंची थी कि न तो उस पर कोई चढ़ सकता था और न कोई उतर सकता था। उस मीनार में कोई सीढ़ी भी नहीं थीं। मात्र एक खिड़की थी जिससे कुझाली ऊंचे-ऊंचे वृक्षों कें शिखरों को देख सकती थी लेकिन उससे नीचे नहीं देख सकती थी।

मीनार में कै़द हो कर कुझाली उदास रहने लगी। उसके साथ कोई नहीं था जिससे वह बोलती, बातें करतीं। उसका स्वर भी उदास रहने लगा। एक दिन कुझाली बहुत दुखी थी। उसे अपने घर की याद आ

रही थी। उसी समय हवा का एक झोंका आया। उसने कुझाली को उदास देखा तो पल भर के लिए उसके पास ठहर गया।

'तुम उदास क्यों हो ?' हवा के झोंके ने कुझाली से पूछा।

'मैं उदास हूं क्योंकि मै अकेली हूं। बंदी हूं।' कुझाली ने कहा।

'ठीक है। तो फिर तुम एक गीत गाओ जिसे मैं तुम्हारे लोगों तक पहुंचा दूंगा और वे आ कर तुम्हें छुड़ा लेंगे।' हवा के झोकें ने कहा।

हवा के झोंके के आग्रह पर कुझाली ने एक दुख भरा गीत गया। उस गीत में कुझाली की समस्त वेदना पिरोई हुई थी। हवा का झोंका उस गीत को ले कर चल पड़ा। बीच रास्ते में हवा के झोंके को याद आया कि वह कुझाली के गांव का पता पूछना तो भूल गया। अब वह वापस भी नहीं जा सकता था अतः उसने आगे आने वाले वन में उस गीत को छोड़ देने का निश्चय किया जिससे हवा का कोई दूसरा झोंका उस गीत को सही ठिकाने पर पहुंचा सके।

एक सुन्दर-सा वन आते ही हवा के झोंके ने कुझाली के दुख भरे गीत को वहीं छोड़ दिया और स्वयं आगे बढ़ गया। गीत के दुख के प्रभाव से देखते ही देखते वन के पेड़-पौधे मुरझाने लगे। चिड़ियों ने चहकना बंद कर दिया और झरनों ने मौन साध लिया। उस वन के लकड़हारों ने यह सब देखा तो घबरा गए और दौड़ कर अपने राजा के पास पहुंचे।

राजा ने अपने पुत्र को वन में भेजा ताकि वह सच्चाई का पता लगा कर आए।

राजकुमार वन में पहुंचा तो उसने भी अत्यंत मधुर स्वर में अत्यंत दुखी गीत को सुना। उसकी आंखों से अश्रु-धारा बहने लगी। वह समझ गया कि इस दुख भरे गीत के कारण वन के सभी पेड़-पौधे मुरझा गए हैं, उसने पता लगाने का निश्चय किया कि यह दुख भरा गीत किसने गाया है। राजकुमार यह विचार कर ही रहा था कि किस दिशा में जाया जाए कि उसी समय हवा का एक झोंका आया।

'राजकुमार तुम किस सोच में डूबे हो ?' उसने राजकुमार से पूछा।

'मैं इस गीत गाने वाली के पास पहुचने का रास्ता ढूंढ रहा हूं कि किस दिशा में जाऊं।' राजकुमार ने कहा।

'मेरा भाई इस गीत को इस जंगल में छोड़ गया था और कहा है मैं इस गीत गाने वाली के पास जा कर उससे उसके गांव का पता पूछ लूं और इस गीत को उसके गांव तक पहुंचा दूं ताकि गांव वाले उसे जा कर बंदीगृह से छुड़ा सकें।' हवा के झोंके ने कहा।

'अरे वाह ! तब तो तुम मुझे अपने साथ ले चलो।' राजकुमार ने हवा के झोंके से कहा। हवा का झोंका मान गया। उसने राजकुमार को अपनी बाहों में उठाया और उड़ चला।

कुछ देर बाद वे लोग उस मीनार के पास पहुंचे जहां कुझाली बंदी थी। हवा के झोंके ने राजकुमार को मीनार पर उतार दिया और स्वयं आगे बढ़ गया। राजकुमार ने उससे कहा था कि वह कुझाली को छुड़ा कर उसके गांव पहुंचा देगा अतः अब गांव वालों तक संदेश पहुंचाने की आवश्यकता नहीं है।

राजकुमार ने जब कुझाली को देखा तो बस, देखता ही रह गया। अपने स्वर के समान वह अत्यंत सुन्दर थी। राजकुमार उसे देखते ही मोहित हो गया। कुझाली को भी राजकुमार अच्छा लगा। किन्तु समस्या थी मीनार से नीचे उतरने की। बिना किसी साधन के मीनार से नीचे नहीं उतरा जा सकता था और साधन वहां था नहीं । तब राजकुमार को एक उपाय सूझा। उसने कुझाली से कहा कि वह एक ऐसा गीत गाए जिससे मीनार के पास खड़े वृक्ष ऊंचे हो जाएं। कुझाली ने ऐसा ही गीत गाया। कुझाली के गीत के प्रभाव से वृक्षों की ऊंचाई बढ़ गई और वे मीनार की खिड़की के पास तक आ पहुंचे। अब राजकुमार ने कुझाली के साथ वृक्ष के सहारे नीचे उतरना आरम्भ किया। वे दोनों अभी मध्य में ही पहुंचे थे कि जादूगरनी आ पहुंची। दरअसल उसने भी कुझाली का गीत सुन लिया था।

जादूगरनी ने राजकुमार और कुझाली को वृक्ष से नीचे गिराने का प्रयास किया किन्तु राजकुमार ने बिना अवसर गंवाए अपनी तलवार से जादूगरनी का सिर काट दिया। इसके बाद कुझाली और राजकुमार आराम से नीचे उतर आए।

नीचे उतर कर राजकुमार ने कुझाली के समक्ष विवाह प्रस्ताव रखा जिसे कुझाली ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राजकुमार कुझाली सहित अपने राज्य पहुंचा जहां उन दोनों का भरपूर स्वागत किया गया और राजा ने भी दोनों के विवाह की स्वीकृति दे दी।

यह मूलरूप से प्रेम कथा है जिसमें एक युवती अपनी गायन क्षमता से न केवल स्वयं को बंदीगृह से मुक्त कराती है वरन एक प्रिय जीवन साथी भी प्राप्त कर लेती है। यदि स्त्री में योग्यताओं को विकसित होने दिया जाए तो किसी भी संकट से निकलने का रास्ता पा सकती है।

भुइया लोककथा

यह जनजाति मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में बसी हुई है। यह सांस्कृतिक मान्यताओं की दृष्टि से एक समृद्धजनजाति है। यह बहुप्रचलित मान्यता है कि भुइया की उत्पत्ति पृथ्वी के गर्भ से हुई थी । यद्यपि भुइया की उत्पत्ति के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि है। भुइयों में उच्चवर्गीय भुइया 'तितुलर भुइया' कहलाते हैं।

सात जोड़े

पहले पृथ्वी पर महासागर के अतिरिक्त कुछ नहीं था। चारों ओर जल ही जल था। ईश्वर ने सोचा कि चारों ओर जल ही जल दिखाई देता है जिससे एकरसता उत्पन्न होती है। अतः उसने भूमि का निर्माण करने का विचार किया। उसी समय महासागर से मिट्टी का एक ऊंचा ढेर बाहर आया। उस ढेर की ऊंचाई थी लगभग चौदह पुरुष। गीली मिट्टी का यह ढेर फैल गया और कीचड़युक्त तट बन गया। इस तट पर एक पुरुष और एक स्त्री का जन्म हुआ। उनके नाम थे परिहार और बरमनी । पानी पर तैरती कीचड़ से निर्मित भूमि परिहर और बरमनी के चलने-फिरने से कांपने लगती। वे गिर-गिर पड़ते। ईश्वर ने यह देखा तो वे समझ गए कि मनुष्य अस्थिर भूमि पर निवास नहीं कर सकते हैं। अतः उन्होंने पुनः विचार किया।

बहुत सोच-विचार के बार ईश्वर ने एक राई बाघ और एक राई बाघिन की मिट्टी की मूर्ति का सृजन किया और उन मूर्तियों में प्राण फूंक कर उन्हें पृथ्वी पर भेज दिया।

'जाओ, मनुष्य के जोड़े को मार डालो और उनका रक्त मांस चारों कोनों पर डाल दो। ताकि पृथ्वी स्थिर हो जाए।' ईश्वर ने राई बाघ और बाघिन को आदेश दिया।

ईश्वर के आदेशानुसार राई बाघ ने पुरुष को और राई बाघिन ने स्त्री को मार डाला। दोनों का रक्त और मांस पृथ्वी के चारों कोनों पर डाल दिया। रक्त और मांस बिखरते ही भूमि स्थिर हो गई। तब पुरुष (परिहार) की सात अस्थियों से सात चट्टानें बनीं, उसके पैरों से विशाल पेड़ बन गए, हाथों से छोटे पेड़ बने, अन्य अस्थियों से तरह-तरह की चट्टानें और पत्थर बने, उसका सिर सूर्य बन गया और उसका सीना चन्द्रमा बन गया। इस प्रकार पृथ्वी पर एक सुन्दर संसार रच गया। ईश्वर ने अपनी इस सृष्टि को देखा तो वह प्रसन्न हुआ।

अब ईश्वर को लगा कि पृथ्वी मनुष्यों के रहने योग्य हो गई है। अतः उसने स्त्री-पुरुष का एक और जोड़ा बनाया और उसे पृथ्वी पर भेज दिया। कई वर्ष तक वह जोड़ा पृथ्वी पर निवास करता रहा। धीरे-धीरे उसे एकरसता का बोध होने लगा। उस जोड़े को लगा कि उनके जैसे और मनुष्य होने चाहिए।

'हे ईश्वर ! आपके पास इतना समय नहीं है कि आप हमारे लिए मनुष्यों के अन्य जोड़े बना कर भेज सकें अतः आप हमें वह शक्ति दें जिससे हम अपने जैसे अन्य जोड़ों का सृजन कर सकें।' पुरुष ने ईश्वर से कहा।

'ठीक है। मैं तुम्हें अधिकार देता हूं। तुम दोनों परस्पर संसर्ग द्वारा नवीन जोड़ों का सृजन करो और इस पृथ्वी को रहने योग्य बनाओ।' ईश्वर ने पुरुष से कहा।

ईश्वर से अनुमति मिलने पर स्त्री और पुरुष ने परस्पर संसर्ग किया जिसमें उन्हें बहुत आनन्द आया। संसर्ग के उपरान्त स्त्री ने गर्भ धारण किया और इसी प्रकार कालान्तर में एक-एक करके सात जोड़ों को जन्म दिया। इन्हीं सात जोड़ों से पृथ्वी पर मानव जाति का विकास हुआ तथा इस पृथ्वी के सभी मनुष्य उन्हीं के वंशज के रूप में उत्पन्न हुए।

भूटिया लोककथा

भूटिया जनजाति का मुख्य निवास पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग तथा कालिपोंग सहित पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करते हैं। वे हिमालय क्षेत्र विभिन्न भागों में भी रह रहे हैं। इनकी बोली सिक्किमी तथा नेपाली से प्रभावित है। भूटिया अपने समुदाय से बाहर विवाह संबंध स्थापित करना पसंद नहीं करते हैं। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा फल-सब्जी उत्पादन है। ये ऊनी शॉल बुनने के लिए विख्यात हैं।

ससुर बहू का जोड़ा -भूटिया लोक कथाओं में ही नहीं वरन सभी लोककथाओ में विशिष्ट कथा है। इस कथा में स्त्री के अस्तिव की गरिमा के साथ ही नई सामाजिक संरचना का आह्वान किया गया है।

एक गांव में एक बूढ़ा अपने परिवार के साथ रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और उसके जवान बेटा-बहू थे। चारो हंसी-खुशी से रहते थे। फागुन मास में बहू का भाई बहू से मिलने आया और चैत्र मास में बहू को मायके आने का आमंत्रण दे गया। जब चैत्र मास आया तो ससुर बहू को पहुंचाने उसके गांव गया। बहू के मायके वालों ने ससुर को भी आतिथ्य- सत्कार करते हुए कई दिन तक रोक लिया।

इस बीच ससुर के गांव में महामारी फैली और पूरा गांव काल कवलित हो गया। एक भी व्यक्ति जीवित न बचा। जब ससुर और बहू अपने गांव लौटे तो वहां का दृश्य देख कर वे रो पड़े। ससुर अपनी पत्नी गवां बैठा था और बहू ने अपना पति खो दिया था। जैसे-तैसे अपने मन को ढाढस बंधा कर दोनों जीवनयापन करने लगे।

'बहू ! मैं तो ठहरा बूढ़ा इंसान, तुमसे पहले मैं इस दुनिया से चला जाऊंगा। फिर तुम अकेली कैसे जीवन चलाओगी ? अतः अच्छा यही होगा कि तुम किसी के साथ दूसरा विवाह कर लो और अपना घर बसा कर एक सुरक्षित जीवन जियो।' ससुर ने एक दिन बहू से कहा।

'ससुर जी, मैं भी चाहती हूं कि मैं विवाह कर लूं किन्तु मैं आपके साथ विवाह करना चाहती हूं।' बहू ने कहा।

'तुम्हारी मति मारी गई है क्या ? ये क्या बक रही हो ? ' ससुर ने बिगड़ कर कहा।

'नहीं, मैं सोच-समझ कर कह रही हूं। आप ही सोचिए कि इस गांव के आप ही एक व्यक्ति बचे हैं, मैं तो यहां की बहू हूं। आपके वंश से यह गांव फिर बस सकता है और बहू होने के कारण भी यही दायित्व है कि मैं अपने पति औनर ससुर के गांव को फिर से बसाऊं। यह सब तभी संभव है जब मैं और आप एक-दूसरे से विवाह कर लें।' बहू ने ससुर को समझाया।

'तू तो बौरा गई है। मान लो मैं तुझसे विवाह कर भी लूं तो लोग क्या कहेंगे ?' ससुर ने कहा।

'कहने को अब इस गांव में बचा ही कौन है ? और फिर गांव की भलाई के लिए किसी का कुछ कहा भी सुनना पड़े तो मैं सुनने को तैयार हूं। आपकी भी यही भावना होनी चाहिए।' बहू ने कहा।

'ठीक है, इस गांव में कोई नहीं बचा है लेकिन आस-पास के गांवों में तो सब बचे हैं। वे क्या कहेंगे ? तेरे मायके वाले क्या कहेंगे ?' ससुर ने कहा।

'आस-पास के गांव वालों को इतनी फुरसत नहीं है कि वे कुछ कहें और रहा प्रश्न मेरे मायके वालों का तो वे मेरे निर्णय पर गर्व करेंगे।' बहू अपने निश्चय पर अटल थी।

'अच्छा ये सब छोड़। चल भोजन परोस दे, मुझे अभी दूसरे गांव जाना है।' ससुर ने बात टालते हुए कहा और हाथ धो कर भोजन करने बैठ गया।

बहू समझ गई कि ससुर के मन में यदि कोई हिचक है तो वह लोगों के कहने-सुनने की। इसलिए उसने ससुर के मन से यह हिचक निकालने की ठानी। जब ससुर दूसरे गांव जाने को निकला तो बहू ने की उसके पीछे की ओर कोट पर अपने लंहगे का टल्ला टांक दिया। ससुर को पता ही नहीं चला।

शाम को ससुर घर लौटा तो बहू ने देखा कि टल्ला उसकी पीठ पर टंका हुआ है।

'आपको किसी ने कुछ कहा ?' बहू ने ससुर से पुछा।

'नहीं !'

'आप पर कोई हंसा ?'

'नहीं।'

'आपको किसी ने ताना मारा ?'

'नहीं ? लेकिन यह सब तुम क्यों पूछ रही हो ?' ससुर ने चकित हो कर पूछा।

'तनिक अपना कोट उतारिए।'

ससुर ने कोट उतार दिया।

बहू ने कोट पर टंका हुआ टल्ला दिखाते हुए कहा, 'देखिए, मैंने आपके कोट पर यह टांक दिया था। आप दिन भर इसे पहने हुए घूमते रहे लेकिन आपसे किसी ने कुछ नहीं कहा। क्यों कि उन्हें इससे क्या मतलब की आप ऐसा कोट पहन कर क्यों घूम रहे हैं ? हो सकता है कि यह आपके गांव का रिवाज हो।'

'लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया ?' ससुर ने चकित होते हुए पूछा।

'इसलिए कि आपके मन से यह हिचक निकल जाए कि आस-पास के गांव वाले क्या कहेंगे ? हमारे यहां हर गांव अलग पहाड़ों पर बसा है। सबकी अपनी कठिनाइयां हैं। उनसे भयभीत होने अथवा हिचकने की आवश्यकता नहीं है। आप मुझसे विवाह कर लीजिए और इस गांव को फिर से बसाने का पुण्यकर्म कीजिए।' बहू ने कहा।

बहू के इस सप्रमाण तर्क के सामने ससुर को झुकना पड़ा। उसने अपनी बहू के साथ विवाह कर लिया। कुछ समय बाद उनकी संतानें हुई। फिर संतानों की संताने हुईं। फिर उन संतानों की संतानों की संताने हुई। फिर उन संतानों की संतानों की संतानों की संताने हुईं.. ....और इस प्रकार कालान्तर में वह उजाड़, सूना गांव बड़े आबादी वाले गांव में बदल गया जिसका आरम्भ ससुर बहू के जोड़े से हुआ था।

सौंर कथा -

सौंर जनजाति मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर भाग में छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना, दमोह एवं सागर में निवास करती है। इन्हें सौंरा, सांउर तथा राउत भी कहा जाता है। सौंरों में बहुप्रचलित धारणा के अनुसार इनकी उत्पत्ति त्रेतायुग की माता शबरी से मानी जाती है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि, मजदूरी तथा वनोपज है। जड़ी-बूटियों का इन्हें अच्छा ज्ञान रहता है। इन्होंने बुन्देलखण्ड के कुछ रीति-रिवाजों को भी धीरे-धीरे अपना लिया है।

बुन्देलखण्ड में बसे हुए सौंर आदिवासियों में पीपर देव की कथा कही-सुनी जाती है। ठीक इसी तरह की कथा 'दसामाता की कथा' के रूप में बुन्देली समाज में प्रचलित है। यह कथा, भूटिया कथा 'ससुर बहू का जोड़ा' की भांति समाज में स्त्री के सम्मान और उसके विचारों के महत्व की कथा है।

कथा के अनुसार एक शहर में एक सेठ और सेठानी थे जिनकी कोई संतान नहीं थी। घर में धन-सम्पदा आदि किसी बात की कमी नहीं थी लेकिन संतान की कमी से वे बहुत दुखी रहते थे। सेठ को चिन्ता रहती कि उनके बाद उनका व्यापार-व्यवसाय कौन सम्हालेगा ? सेठानी

इस बात से दुखी रहती कि मिलने-जुलने वाली औरतें उसे टोकती रहतीं।

'सुनिए, आप ऐसा करिए कि संतान प्राप्त करने के लिए दूसरा विवाह कर लीजिए।' एक दिन सेठानी ने दिल पर पत्थर रख कर सेठ से कहा।

'यह असम्भव है ! यदि ईश्वर मुझे संतान देना चाहता तो तुम्हारी कोख से ही दे देता..... मैं दूसरा विवाह कभी नहीं करूंगा।' सेठ ने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया।

सेठ की बात सुन कर सेठानी को प्रसन्नता भी हुई और दुख भी हुआ। प्रसन्नता इस बात की सेठ उसे छोड़ कर दूसरा विवाह नहीं करना चाहता है और दुख इस बात कि सेठ के इस हठ के कारण उत्तराधिकारी नहीं मिल सकेगा। सेठ और सेठानी ने तो एक-दूसरे का दुख-समझ लिया किन्तु परिवार-समाज के लोग 'संतान कब होगी ?' पूछ-पूछ कर परेशान करते रहते।

तंग आ कर एक दिन सेठानी ने घोषणा कर दी कि वह गर्भवती है। यह भेद सेठ और सेठानी ही जानते थे कि यह सब झूठ है। गर्भ का समय पूरा होने का ढोंग करते हुए दोनों ने यह प्रचारित कर दिया कि इतने वर्षो बाद संतान उत्पन्न होने वाली है अतः वे किसी तीर्थ स्थल में जा कर उसे जन्म देंगे। सभी को उनकी बात सच लगी।

लगभग माह भर धूम-धाम कर सेठ और सेठानी वापस आ गए। सेठानी ने कपड़े की एक पोटली इस तरह उठा रखी थी जैसे नवजात शिशु उसकी गोद में हो। जिसने भी देखा उसने विश्वास कर लिया कि सेठानी की गोद में उसकी संतान है। सेठ ने पुत्र-जन्म की खुशी में सभी को आमंत्रित किया और जी भर कर भोजन कराया। सभी ने नवजात पुत्र को आशीर्वाद देने के लिए देखना चाहा तो सेठ ने कहा कि 'हमें एक ज्योतिषी ने कहा है कि हमारा पुत्र वयस्क होने तक किसी के सामने न आए अन्यथा उसके प्राणों के लिए संकट हो सकता है। इसलिए आप लोग उसे देखे बिना ही आशीर्वाद दे दीजिए।'

किसी को भी सेठ की बातों पर संदेह नहीं हुआ। उन्होंने पुत्र को देखे बिना ही आशीर्वाद दिया और चले गए।

धीरे-धीरे समय व्यतीत होता गया। लोगों ने पूछना शुरू कर दिया कि सेठ और सेठानी अपने पुत्र का विवाह कब कर रहे हैं ? इस प्रश्न को ले कर सेठ और सेठानी एक बार फिर संकट से घिर गए। यदि पुत्र होता तो विवाह करते काल्पनिक पुत्र का विवाह कैसे हो ? अतंतः सेठानी ने ही रास्ता ढूंढा।

'सुनिए, हम किसी दूर के शहर की लड़की पसन्द करेंगे और उसके माता-पिता से कह देंगे कि पुत्र के विवाह का एक ही मुहूर्त है अतः इसे टाला नहीं जा सकता है। चूंकि हमारा पुत्र व्यापार के सिलसिले में सात समुन्दर पार गया है इसलिए कटार के साथ लड़की का विवाह करा कर, अपनी बहू बना कर ले जाएंगे।' सेठानी ने सेठ को सुझाव दिया।

उस जमाने में इस प्रकार के विवाह का प्रचलन था इसलिए बात बन गई। सेठ और सेठानी एक सुन्दर लड़की को अपनी बहू बना कर ले आए। कुछ दिन तो बात ढंकी रही लेकिन आखिर बहू को कब तक पता नहीं चलता ?

'बहू ! हम दोनों तेरे अपराधी हैं। अब चाहे तू इस सच्चाई को सबको बता करके हमें सबके सामने नीचा दिखा दे या फिर हमारी विवशता समझते हुए हमारा साथ दे, यह तेरी इच्छा पर निर्भर है। ' सेठानी ने बहू को सारी सच्चाई बताते हुए कहा।

'मां जी, मैं आप लोगों की विवशता समझ सकती हूं। अब मैं इस घर की बहू हूं इसलिए आप लोगों का मान-सम्मान मेरा मान-सम्मान है। मैं आप लोगों का साथ दूंगी। बस, आप मुझे पीपर देव(पीपल के वृक्ष) की पूजा करने की अनुमति दें।' सेठ और सेठानी को भला इसमें क्या आपत्ति होती ? उन्होंने बहू को पीपर देव की पूजा करने की सहर्ष अनुमति दे दी।

बहू ने अपने कमरे में पीपल का पेड़ लगवाया और सास की अनुमति से कमरे में पीपल की पूजा शुरू कर दी। पूजा के समय बहू कमरे का दरवाज़ा बंद कर लेती ताकि कोई व्यवधान उत्पन्न न हो।

सात दिन तक पूजा करते रहने के बाद एक चमत्कार हुआ। पीपल के पेड़ से एक सुन्दर युवक निकल आया। बहू उसे देख कर डर गई।

'तुम कौन हो ?'

'डरो नहीं ! मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा, मैं तो तुम्हारे साथ चौपड़ खेलना चाहता हूं।' युवक ने कहा।

बहू ने सोचा कि चौपड़ खेलने से उसका अपना मन भी लगा रहेगा अतः उसने उस युवक की बात मान ली।

उसके बाद प्रतिदिन उस बंद कमरे में पूजा के बाद वह युवक पीपल से निकलता और चौपड़ खेल कर पीपल में समा जाता। चौपड़ खेलने के दौरान उस युवक से बहू की मित्रता हो गई और बहू ने उस युवक को अपना पति मान लिया। कुछ दिन बाद बहू गर्भवती हो गई। बहू के गर्भवती होने के बारे में जब सेठ-सेठानी को पता चला तो वे घबरा गए किन्तु बहू ने उन्हें ढाढस बंधाते हुए कहा, आप लोग चिन्ता मत करिए ! आप कुटुम्ब-समाज के लोगों को पीपर देव की पूजा में आमंत्रित कर लीजिए ! उनसे कहिएगा कि आप उन्हें अपने पुत्र से मिलवाएंगे।'

सेठ-सेठानी ने ऐसा ही किया। कुटुम्ब-समाज के लोगों के आ जाने पर बहू ने अपने बंद कमरे में पीपल की पूजा प्रारम्भ की। सेठ और सेठानी भी उसके साथ पूजा में उपस्थित थे। पूजा समाप्त होते ही पीपर देव की कृपा से वह युवक प्रकट हो गया जो प्रतिदिन पूजा के उपरांत सामने आया करता था।

'आज से तुम्हें मेरे पति के रूप में मेरे साथ रहना होगा अन्यथा मैं गर्भ में स्थित अपनी संतान सहित अपने प्राण त्याग दूंगी।' बहू ने उस युवक से कहा।

'मैं भी इसी दिन की प्रतीक्षा में था। मुझे तो सेठ और सेठानी के पुत्र के रूप में इसी घर में जन्म लेना था किन्तु पिछले जन्म में मैने अपने माता-पिता को बहुत कष्ट दिया था इसलिए मुझे एक साधु ने शाप दिया था कि मैं इस घर में पुत्र का स्थान तभी पा सकूगां जब इस घर की गर्भवती बहू अपना पति बनने का आग्रह करेगी। मुझे लगता था कि यह कभी नहीं हो सकेगा और मैं सदा शापग्रस्त रहूंगा किन्तु आज तुमने मुझे शापमुक्त कर दिया। अब मैं सदा तुम सबके साथ रहूंगा।' युवक ने बहू का आभार मानते हुए कहा। युवक ने सेठ और सेठानी के चरण छुए। सेठ और सेठानी ने युवक को अपने गले से लगा लिया।

इसके बाद बहू ने अपने कमरे का दरवाजा खोला और युवक के साथ बाहर आयी। सेठ और सेठानी ने अपने बेटे-बहू को सभी से मिलवाया बहू के गर्भवती होने का सुखद समाचार सभी को सुनाया।

सब के सामने प्रकट होने से वह युवक शापमुक्त हो कर सदा के लिए सेठ-सेठानी के घर पर रह गया तथा बहू ने अपना पति एवं अपने होने वाले बच्चे का पिता पा लिया। सभी प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे।

यह कथा सामाजिक संरचना एवं स्त्री के लिए निर्धारित कठोर बंधनों से मुक्ति का एक रास्ता दिखाती है। इस कथा में बहू के रूप में छल द्वारा छद्म विवाह के बंधन में बांध दी गई स्त्री का बंधन तोड़ कर अपने अस्तित्व को स्थापित करने का सफल प्रयास है। इस कथा की नायिका राजपूत काल में कटार से विवाह करा दिए जाने पर जीवन बिताने तथा कटार के साथ सती हो जाने वाली तथाकथित 'विरांगना स्त्री' नहीं है वरन् विवाहेत्तर युवक से संतान उत्पन्न कर उसे पति के रूप में तथा संतान को वैध संतान के रूप में समाज मे स्थान दिलाने वाली दृढ़ स्त्री है। वह जानती है कि इस असंभव कार्य को किस प्रकार संभव किया जा सकता है। यूं भी 'नियोग' द्वारा संतान उत्पन्न करना प्राचीन भारतीय समाज में स्वीकार्य था विशेष रूप से उच्च वर्ग में। किन्तु इस कथा में 'नियोग' के बदले 'पीपरदेव' के चमत्कारी सहयोग को माध्यम बनाया गया है। इस कथा में ध्यान देने योग्य तथ्य यह भी है कि यह स्त्री के प्रति बुंदेली समाज के उदार एवं लचीले आचरण की ओर भी संकेत करता है। अन्यथा समाज का कट्टरपंथी कठोर आचरण किसी स्त्री को इस प्रकार पति पाने और उससे उत्पन्न संतान को वैधानिक दर्जा पाने की छूट नहीं देता है। यद्यपि ऐसे उदाहरण समाज में मुक्त रूप से नहीं मिलते हैं क्योंकि कथा का वाचन और श्रवण भले ही बहुलता से किया जाता हो किन्तु कथा के मर्म को यथास्थिति स्वीकार करने का साहस समाज कहीं खो चुका है। फिर भी यह कथा इस बात का स्पष्ट संकेत देती है कि स्त्री विषम परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाने एवं समाज में परिवर्तन लाने का माद्दा रखती है बशर्ते उसे परिवार तथा वह जिस पर विश्वास करती हो उसकी ओर से सहायता मिले, चाहे उसका रूप 'पीपरदेव' अथवा सास-ससुर का हो।

उपर्युक्त आदिवासी लोक कथाओं में स्त्री की सहज प्रकृति को वर्णित किया गया है। पुरुषवादी समाज में स्त्री से उनके उन गुणों की अपेक्षा की जाती है जिसमें वह पुरूष के प्रति समर्पित, स्वविवेक को भूल कर आज्ञा मानने वाली, स्वनिर्णय क्षमता रहित तथा पूर्णतया पुरूष पर निर्भर रहे। जबकि उदाहरण के लिए चुनी गई इन कथाओं में स्त्री का पुरूष के प्रति प्रेम, समर्पण तथा निष्ठा तो है किन्तु साथ ही यह स्त्री इच्छित पति चुन सकती है, किसी भी आयु, किसी भी अवस्था में विषम परिस्थितियों का डट कर सामना कर सकती है, अपने बुद्धिकौशल से पुरूषों को भी संकट से बचा सकती है, उसमें अपने अधिकारों के लिए लड़ने की क्षमता है, वह स्त्रीजाति के अस्तित्व के प्रति सजग है अर्थात् इन कथाओं की स्त्री एक पूर्ण मनुष्य की भांति पूर्ण स्त्री है। आवश्यकता है इन कथाओं को वर्तमान सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों पर परखने और पुनर्व्याख्यायित करने की।

❑❑

एम- एक सौ ग्यारह, शांतिविहार,
सागर, म.प्र.-470004
दूरभाष : 07582 2300880